कक्षा-नवम् क्षितिज-काव्यखंड

सांखियाँ

विषय-हिन्दी

दिनांक-31/03/2020

2." प्रेमी ढूंढत मैं फिरौं प्रेमी मिले न कोई।

प्रेमी को प्रेमी मिले सब विष अमृत होई।2।"

प्रसंग-- कबीर दास जी द्वारा रचित उपरोक्त साखी में कबीर दास ने स्वयं को प्रेमी के रूप में वर्णित करते हुए सच्चे प्रेम एवं सच्चे प्रेमी की तलाश करना बताया है ।

व्याख्या ----संत कवि कबीर दास का कहना है कि वह संसार में घूम- घूम कर सच्चे प्रेमी की तलाश कर रहे हैं परंतु उन्हें निःस्वार्थ, निर्लोभी प्रेमी कहीं नहीं मिल पा रहा है। कबीर के अनुसार जब दो सच्चे भक्त (प्रभु भक्त) मिलते हैं तो उनके बीच कोई असमानता नहीं रह जाती है जिसके कारण वे आपस में इस तरह मिल जाते हैं कि यह आभास ही नहीं होता है कि वे दो व्यक्ति हैं या एक अर्थात कवि इस साखी के माध्यम से यह कहते हैं कि जब दो सच्चे प्रभु भक्त मिल जाएंगे तो वहां अमृत ही अमृत हो जाएगा विष रहने की नाम मात्र भी गुंजाइश नहीं रह जाएगी।

विशिष्ट अर्थ—जब दो सच्चे प्रभु भक्त का मिलन होता है तो उनके बीच भेदभाव, ऊंच-नीच, क्लेश आदि जैसे विष रूपी बुरी भावनाओं का नाश हो जाता है एवं वहां व्याप्त विष भी अमृत में परिवर्तित हो जाता है।

मुख्य तथ्य—

- प्रेम ईश्वर का पर्याय है ।
- प्रेम विषमता में समता प्रतिकूलता में अनुकूलता लाता है

शब्दार्थ---

ढूँढत=ढूँढना

कौ=को

विष=जहर

होई=होना

3 .” हस्ती चढिए ज्ञान को सहज दुलीचा डारि।

स्वान रूप संसार भूकन दे झख मारि।3।“

प्रसंग -उपयुक्त साखी में संत कवि कबीर ने यह वर्णन किया है कि ज्ञानी पुरुष संसार द्वारा किए गए निंदा की परवाह किए बगैर ज्ञान के मार्ग पर चलता है।

व्याख्या—संत कवि कबीरदास कहते हैं कि ज्ञानी वही मनुष्य है जो ज्ञान के मार्ग पर संसार की निंदा को अनसुना कर चलते रहता है।

यदि ज्ञान रूपी हाथी पर चलना है तो सहजता का गलीचा(कालीन)डालकर चलो क्योंकि यह संसार एक कुत्ते के समान है जो मौका पाते ही कुत्ते के समान भोंकने लगता है संसार की तो आदत ही होती है दूसरों को देखने की ,दूसरे की निंदा करने की ।

स्वान रूप संसार के लाख भोंकने पर भी ज्ञानी अपना ज्ञान का मार्ग नहीं छोड़ता है मनुष्य ज्ञानी वही होता है जो सामाजिक निंदा को अनसुना कर अपने भक्ति मार्ग पर, ज्ञान मार्ग पर चलता रहता है ।

विशिष्ट अर्थ—जब व्यक्ति सांसारिक पाखंडो से दूर हट कर चलता है, ज्ञान की राह में सबसे अलग चलने लगता है तब संसार के लोग उसे अपनी तरह साधारण बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहते हैं एवं उनका मनोबल तरह-तरह की चर्चाओं द्वारा कमजोर करते हैं इसलिए कवि कहते हैं कि अपने ज्ञान रूपी हाथी पर सवार होकर सहजता एवं धैर्यता को अपनाकर अपने कर्म पर ध्यान देना चाहिए एवं सुपथ नहीं छोड़ना चाहिए।

मुख्य तथ्य—

- संसार अच्छे कर्म करने वाले को अच्छे कर्म करने से हटाने का एक भी मौका नहीं छोड़ता है।
- ज्ञानी व्यक्ति किसी बात की परवाह नहीं करता है वह ज्ञान के मार्ग पर चलता है ।
- ज्ञानी मनुष्य सहज एवं धैर्यवान होता है

शब्दार्थ—

हस्ती =हाथी

सहज =स्वभाव ,प्रकृति ,अहंकार रहित

दुलीचा= कालीन

स्वान =कुत्ता

झख मारी= झख मारना

प्रश्न—

1. मानसरोवर से कवि का क्या आशय है ?
2. कवि ने सच्चे प्रेमी की क्या कसौटी बताई है?
3. प्रस्तुत साखी में प्रयुक्त मुहावरे का अर्थ वाक्य द्वारा स्पष्ट करें।

Note---

- छात्र अपनी उत्तर पुस्तिका में उपयुक्त तथ्यों को लिखें।
- साखियां याद करें।

क्रमशः

डॉ. कुमारी पिंकी "कुसुम"